सन् 47 को याद करते हुए

केदारनाथ सिंह

तुम्हें नूर मियाँ की याद है केदारनाथ सिंह
गेहुएँ नूर मियाँ
ठिगने नूर मियाँ
रामगढ़ बाज़ार से सुर्मा बेचकर
सबसे अन्त में लौटने वाले नूर मियाँ
क्या तुम्हें कूछ भी याद है केदारनाथ सिंह

तुम्हें याद है मदरसा
इमली का पेड़
इमामबाड़ा
तुम्हें याद है शुरू से अख़ीर तक
उन्नीस का पहाड़ा
क्या तुम अपनी भूली हुई स्लेट पर
जोड़-घटाकर
यह निकाल सकते हो
कि एक दिन अचानक तुम्हारी बस्ती को छोड़कर
क्यों चले गये थे नूर मियाँ
क्या तुम्हें पता है
इस समय वे कहाँ हैं
ढाका
या मुलतान में
क्या तुम बता सकते हो
हर साल कितने पत्ते गिरते हैं
पाकिस्तान में

तुम चुप क्यों हो केदारनाथ सिंह
क्या तुम्हारा गणित कमज़ोर है

केदारनाथ सिंह, **यहाँ से देखो**
दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन 1983 (1995):77